हरित स्वच्छ श्यामला धरती,
सबमें शान्ति स्फूर्ति भरती।

जहाँ हरियाली है,
वहीं खुशहाली है।

धरती पर स्वर्ग है वहाँ,
हरे-भरे वृक्ष हैं जहाँ।

पेड़ों को मत काटो भाई,
ये करते प्राकृतिक भरपाई।

कहते हैं सब वेद पुराण,
एक वृक्ष दस पुत्र समान।

बिलखती है धरती बचाओ मुझे,
प्रदूषण से मुक्ति दिलाओ मुझे।

सृष्टि के सृजन की प्रतीक,
हरित स्वच्छ
वसुधा की तकदीर।

बंजर भूमि करे पुकार,
पेड़ लगाकर करो श्रृंगार।

माँ की ममता-पेड़ का दान,
दोनों करते जन-कल्याण।

जीव मात्र की यही पुकार,
हरा भरा हो यह संसार।

पर्यावरण है
अगर बचाना,
हरीतिमा संवर्धन
अपनाना।

वृक्ष पानी और
शुद्ध हवा,
जीवन रक्षा की
अनमोल दवा।

हरियाली से है
जिसका नाता,
सुख समृद्धि
उसको भाता।

वृक्षारोपण एक
परम पुनीत कर्त्तव्य
एवं अनिवार्य
उत्तरदायित्व है।

पर्यावरण संरक्षण एक
परम पुनीत पुण्य एवं
सर्वोपरि कर्त्तव्य है।

वृक्षों के परिधान
पृथ्वी माता की
शोभा है।

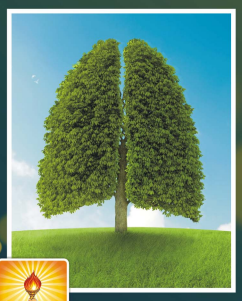

श्वांस द्वारा प्राप्त
होने वाला अमृत
हमें वृक्ष-वनस्पतियों
द्वारा प्राप्त होता है।

संसार के समस्त
वनस्पति
औषधि रूप हैं।

वन रोपें उद्यान लगाएँ,
हरा-भरा निज देश बनाएँ।

वृक्ष-वनस्पति के प्रति
श्रद्धा अक्षुण्ण रहे।

वृक्षारोपण ब्रह्मकर्म के समतुल्य है।

अपने जीवन में प्रकृति का प्रवेश होने दीजिए।

जो वृक्षारोपण करता है, वह तीस हजार पितरों का उद्धार करता है।

-मत्स्य पुराण

जो मनुष्य लोगों के हित के लिए वृक्ष लगाता है, वह मोक्षपद प्राप्त करता है।

-अग्नि पुराण

जो मनुष्य वृक्ष लगाता है, वे वृक्ष परलोक में उसके पुत्र बनकर जन्म लेते हैं।

-विष्णु स्मृति

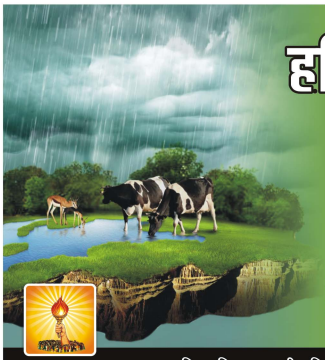

हरियाली है तो मेघ है,
मेघ है तो जल है,
जल है तो अन्न है,
अन्न है तो जीवन है।

वृक्षारोपण आन्दोलन चलाएँ, अधिकाधिक सब वृक्ष लगाएँ।

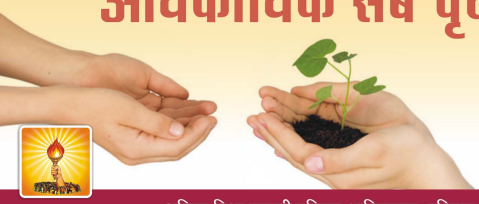

पेड़ों से वायु और वायु से आयु।

वृक्षारोपण युगधर्म है।

वृक्ष लगायें, धरा बचायें।

वृक्ष कटा, जीवन मिटा।

वृक्ष वृद्धि,
सर्व समृद्धि।

वृक्ष एक,
लाभ अनेक।

पेड़ हमारी शान है,
जीवन की मुस्कान है।

पौधा प्राणवान है,
उसे प्रेम की अपेक्षा है।

वृक्ष लगाओ,
पुण्य कमाओ।

लहलहाते वृक्ष-वनस्पति ही
किसी राष्ट्र की
सच्ची प्रगति दर्शाते हैं।

हरियाली लाइए,
खुशियाली पाइए।

वृक्ष ही
ऊर्जा संकट का
समाधान है।

वृक्ष लगाना हमारा
नैतिक कर्त्तव्य है।

वृक्षों के रक्षक बनें,
भक्षक नहीं।

पेड़ लगाये हर इन्सान,
माँ वसुन्धरा
देती वरदान।

मूलःब्रह्मा, त्वया विष्णुः,
शाखाः रुद्रो महेश्वरः।
पत्रे पत्रे तु देवानाम,
वृक्षराजो नमोः स्तुते॥

वृक्ष काट मेरे दोस्त,
मत करो तुम पाप।
रोती धरती तुमको भी
देगी अभिशाप॥

मत काटो इन पेड़ों को
इनमें होती है जान,
बिन पेड़ों के हो जायेगा,
सबका जीवन सुनसान।

ग्लोबल वार्मिंग से
खतरे हैं भरपूर,
पर्यावरण की रक्षा से
कर सकते हैं दूर।

कड़ी धूप है जलते पाँव,
होते पेड़ तो मिलती छाँव।

हरियाली भूतल-शृंगार,
जहाँ वृक्ष है वहीं बहार।

लघु सेवा
तरु हमसे लेते,
अमित लाभ
जीवन भर देते।

करते वृक्ष प्रदूषण दूर,
देते हैं वर्षा भरपूर।